अभिशाप

पुधुवई रा रजनी

चित्राँकन शारदा नटराजन

पुधुवई रा रजनी

पुधुवई तमिल भाषा के प्रसिद्ध लेखक हैं। इनकी पुस्तक, *थीवुगालिन संधिपु,* 1994 में प्रकाशित हुई थी। इनकी कहानियों की पृष्ठभूमि ग़रीबी पर आधारित होती है, जो हमारे समाज का अनिवार्य अंग बन चुकी है। अपनी रचनाओं में ये हास्य विनोद का अक्सर प्रयोग करते हैं, जो हमारे व्यवहार में इन दिनों कम ही नज़र आता है।

इस कहानी की प्रेरणा इन्हें इस बात से मिली, कि अक्सर देखा गया है कि यदि किसी को हम कष्ट पहुँचाते हैं, तो वह हमें दुखी होकर श्राप दे देता है जिसे हाय भी कहते हैं।

KATHA

पहला संस्करण, 1997, दूसरा संस्करण, 2004 तीसरा संस्करण 2009
चौथा संस्करण 2010, पाँचवाँ संस्करण 2010, छठवाँ संस्करण 2010
कृति स्वामित्व © कथा, 1997
सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-85586-68-5

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है, बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना।

ए-3 सर्वोदया एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 2652 4350, 2652 4511
फ़ैक्सः 2651 4373
ई मेलः marketing@katha.org . kathakaar@katha.org
इंटरनेटः http://www.katha.org

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।
इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

अभिशाप

लेखक
पुधुवई रा रजनी

चित्राँकन
शारदा नटराजन

(मूल तमिल भाषा से अनूदित व रूपांतरित)

कथा, नई दिल्ली

वो नन्हा-सा शैतान, हाथ में नारियल की रस्सी से बंधी गिरगिट लिए, चला आ रहा था। उसके चेहरे पर, अपने कैदी को बांधे ला रहे, विजयी योद्धा-सी चमक थी। मैंने गिरगिट को देखा, वह रस्सी से पुराने घड़ियाल के घंटे की तरह झूल रही थी। आँखों पर सफेद परत थी। उसके हरे, पीले और कथ्थई रंग की धारियों वाले शरीर में अचानक सिहरन हुई, फिर वह शांत हो गई।

"अप्पा ... देखो ..." मेरा बेटा उत्साहपूर्वक उछलते हुए चिल्लाया।

"तुम्हें कहना चाहिए अप्पा, देखिए ..." हमेशा की तरह वत्सला उसे आदरपूर्वक बात करना सिखा रही थी। "आप डाँटते क्यों नहीं इसे?" पर मैं उसे क्या डाँटता, उसकी उम्र में तो मैं रस्सी पर तीन-तीन गिरगिट बाँधे, भागता फिरता था।

"इसे कहाँ से पकड़ा, बेटा?" मैंने उसकी पीठ पर प्यार से हाथ फेरते हुए पूछा।

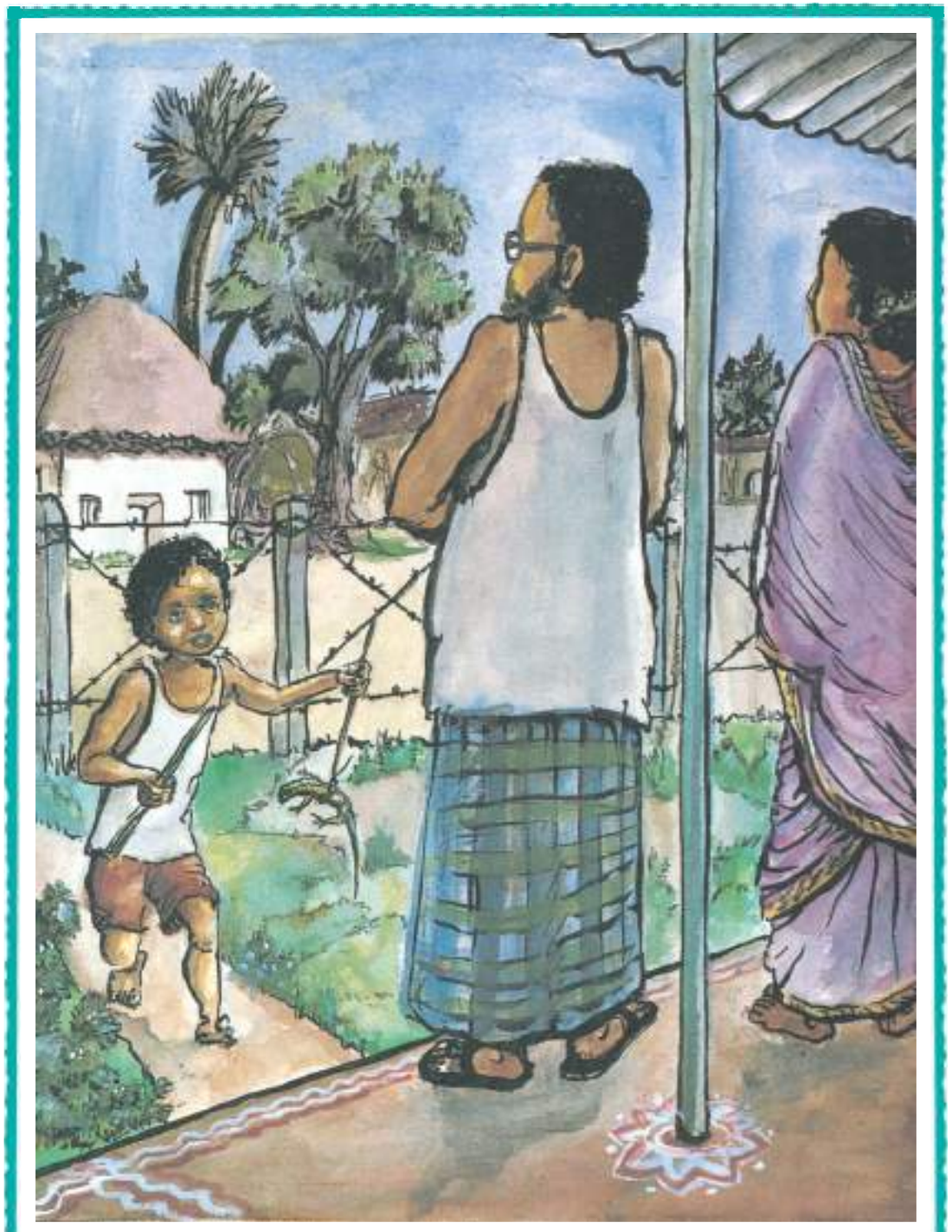

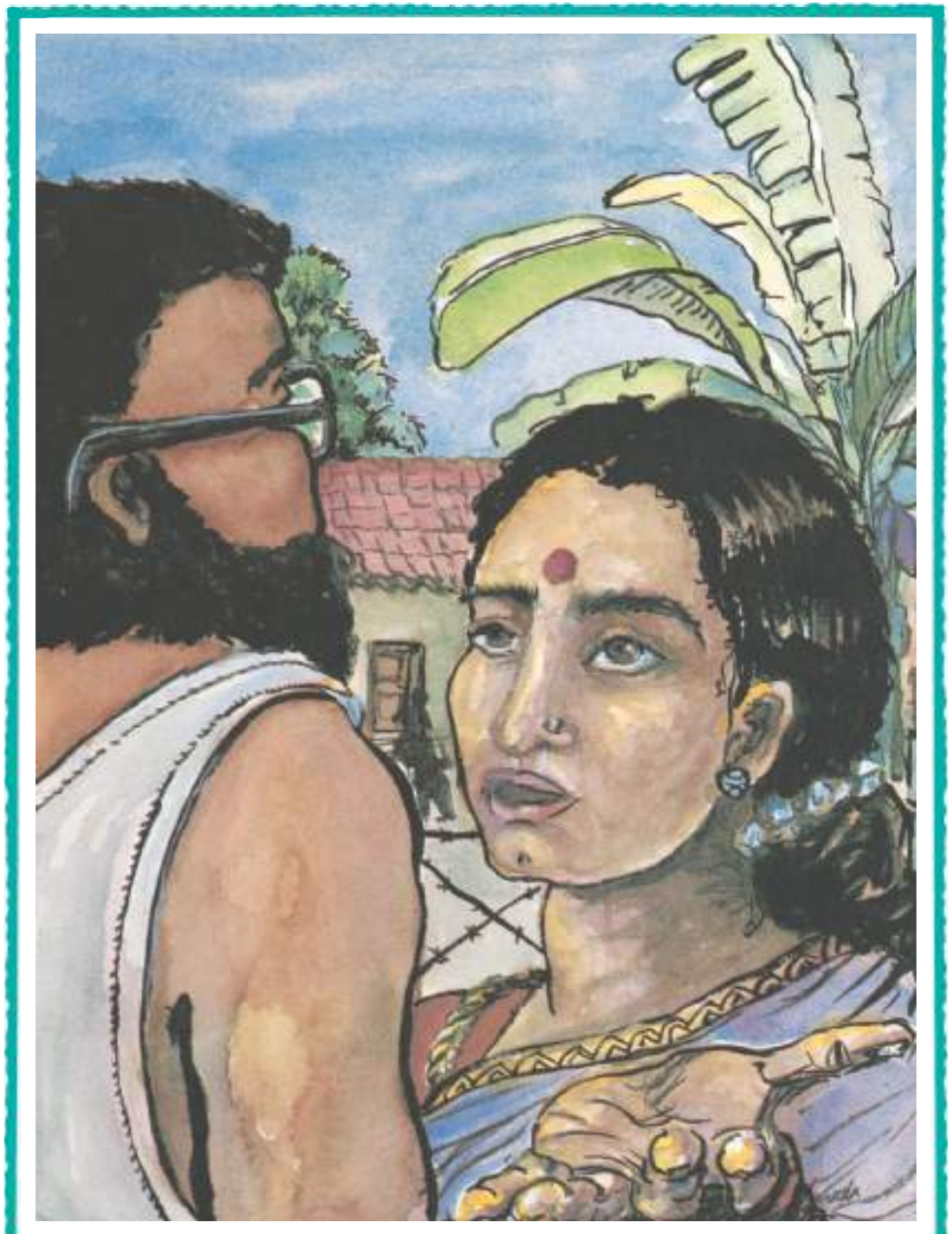

"मैं मंदिर के पास से आ रहा था ..." उसने सारा किस्सा, एक साँस में कह डाला। उसने रस्सी को हिलाना बंद कर दिया और गिरगिट आज़ाद होने के लिए कूदने लगी।

पड़ोस की बूढ़ी अम्मा बोली, "फिर पकड़ लाया? इसको तलकर, नमक मिर्च लगाकर खा ले।" और नन्हें ने जवाब में उन्हें तुरंत मुँह चिढ़ा दिया।

"हुँअअ ... फिर?" मैंने उसे फिर उकसाया।

"हाँ, बस यही तो रह गया है सबसे ज़रूरी काम!" वत्सला बोली। "पोंगल सर पर आ गया है। याद है, मैंने अपने भतीजे के लिये आधे तोले की कुछ चीज़ बनाने के लिए कहा था ..."

उसकी बातों से लगा, जैसे नन्हें और मेरी बातों के चटखारे पर पानी फेर दिया गया हो ... काश! मैं गिरगिट होता तो शांतिपूर्वक इसी रस्सी में लटका पड़ा होता।

मैंने वत्सला को देखा, "अब मैं रुपये कहाँ से लाऊँ, गणेश का पहले ही 400 रुपये का कर्ज़ा है, 1300 विक्टर ..."

"अइयो, हमें कुछ तो करना होगा, रिश्ते थोड़े ही बिगाड़ सकते हैं, लोगों ने बातें बनानी शुरू कर दी तो इज्ज़त मिट्टी में मिल जाएगी।" उसके स्वर में आक्रोश और भय दोनों ही साफ नज़र आ रहे थे।

"अप्पा, मैं गिरगिट का क्या करूँ?"

कोई पकड़ी हुई गिरगिट का कर भी क्या सकता है।

"इसे छोड़ दो," मैंने उत्तर दिया।

उसने गिरगिट को धीरे से ज़मीन पर उतारा। गिरगिट के शरीर में हलचल हुई और उसने धीरे से आँखें खोल दीं। ज़मीन देखते ही वह आगे को कूद पड़ी। पर उसे अचानक रस्सी ने रोक दिया। पूँछ फटकारते हुए, उसने अपनी आँखें चारों ओर घुमाईं। नन्हें ने उसकी रस्सी खोलनी चाही तो गिरगिट ने सिर ऊपर उठा दिया। नन्हें ने झट से हाथ खींच लिया।

मैंने उठकर रस्सी की गाँठ खोल दी। उसे शायद यकीन नहीं हुआ की वह स्वतंत्र हो चुकी है। कुछ क्षण वह स्तब्ध खड़ी रही फिर तेज़ी से पिल्लयार मंदिर के काले चबूतरे पर चढ़ी और पीछे झाड़ियों में गायब हो गई।

नन्हें ने खुशी के मारे उछलते हुए ताली बजा दी। बचपन भी कितना सुखद होता है, चिंतामुक्त, समस्या रहित। परन्तु केवल कुछ ही समय के लिए।

उन दिनों हमारे यहाँ न तो पक्की सड़कें थी न ही पक्की नालियाँ। लाल मिट्टी के कच्चे रास्तों के दोनों ओर टेढ़ी-मेढ़ी कच्ची नालियाँ थीं। नालियों के पास ही थोपू ताता का बड़ा-सा बाग था। जीवन से सराबोर।

केले के पेड़ स्वादिष्ट फलों से भरे थे। सुपारी की बेलें उनसे लिपटी रहती थीं। लंबे अरंडी के वृक्ष, हवा में लहराते थे। हरी-भरी शाखाओं पर, सूखे-सूखे फल इतराते थे। थोपू थाथा ने कटनमनी की झाड़ियाँ और काँटेदार पौधे भी उगा रखे थे।

हमारा शिकार सुबह शुरू हो जाता था। थाँबू, लंगड़ा सेलवम, ज़ाकिर और मैं। थाँबू और मैं नारियल की रस्सी लिए रहते थे। ज़ाकिर और सेलवम, गुलेल। गिरगिट के शिकार में सेलवम का कोई मुकाबला नहीं कर सकता था। वह लड़खड़ाता उनके पीछे भागता था।

उसके दादा की टाँगें भी उसकी तरह थीं, एक बड़ी, एक छोटी। भागने पर छोटी टाँग, ज़मीन पर घिसटती रहती थी। उन्हें सेलवम का गिरगिट पकड़ना फूटी आँख न सुहाता था। वे लँगड़ाते हुए उसके पीछे भागते और वो लँगड़ाता हुआ आगे-आगे। जब भी सेलवम पकड़ा जाता, उसकी कसकर धुनाई होती थी।

गिरगिटें झाड़ियों में होती थीं, लगभग ओझल। न जाने कितनी तरह की थीं वे।

एक पतली-सी होती थी, शरीर कुछ लाल रंगत लिए, और जो एक पौधे से दूसरे पर कूदती रहती थी। हमने थाँबू के कहने पर इसका नाम रखा था - वरुट।

एक थी एकदम काली, जिसकी आँखों के पास कुछ सफ़ेद धब्बे होते थे। इसे कहते थे चितकबरी, सेलवम को कहीं दिखाई पड़ जाये तो इसकी ख़ैर नहीं!

बूढ़ी गिरगिट सबसे अलग होती थी। फूले करेले जैसा शरीर। बड़े सिर के कारण वह डरावनी लगती थी। इसको पकड़ना बहुत आसान होता था।

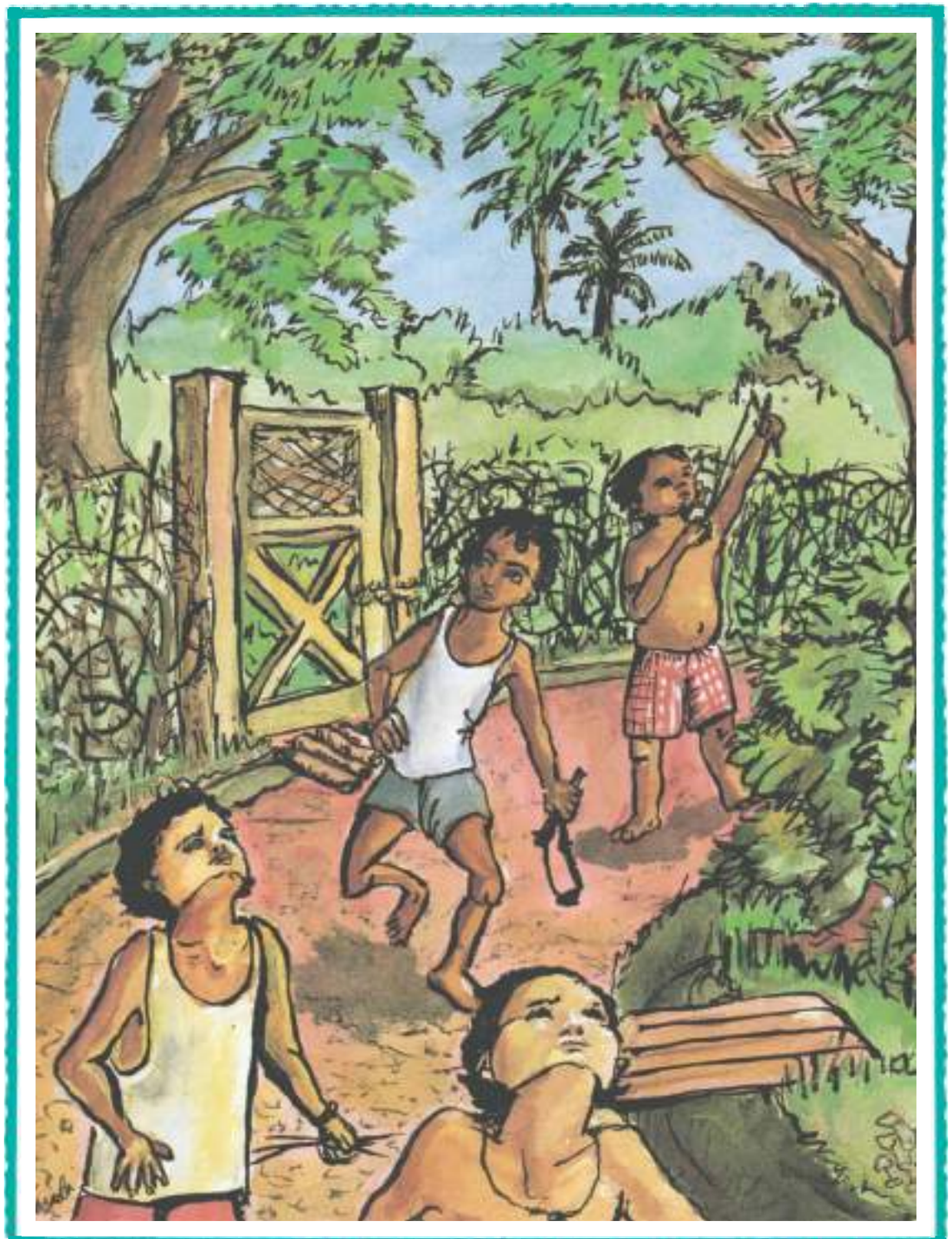

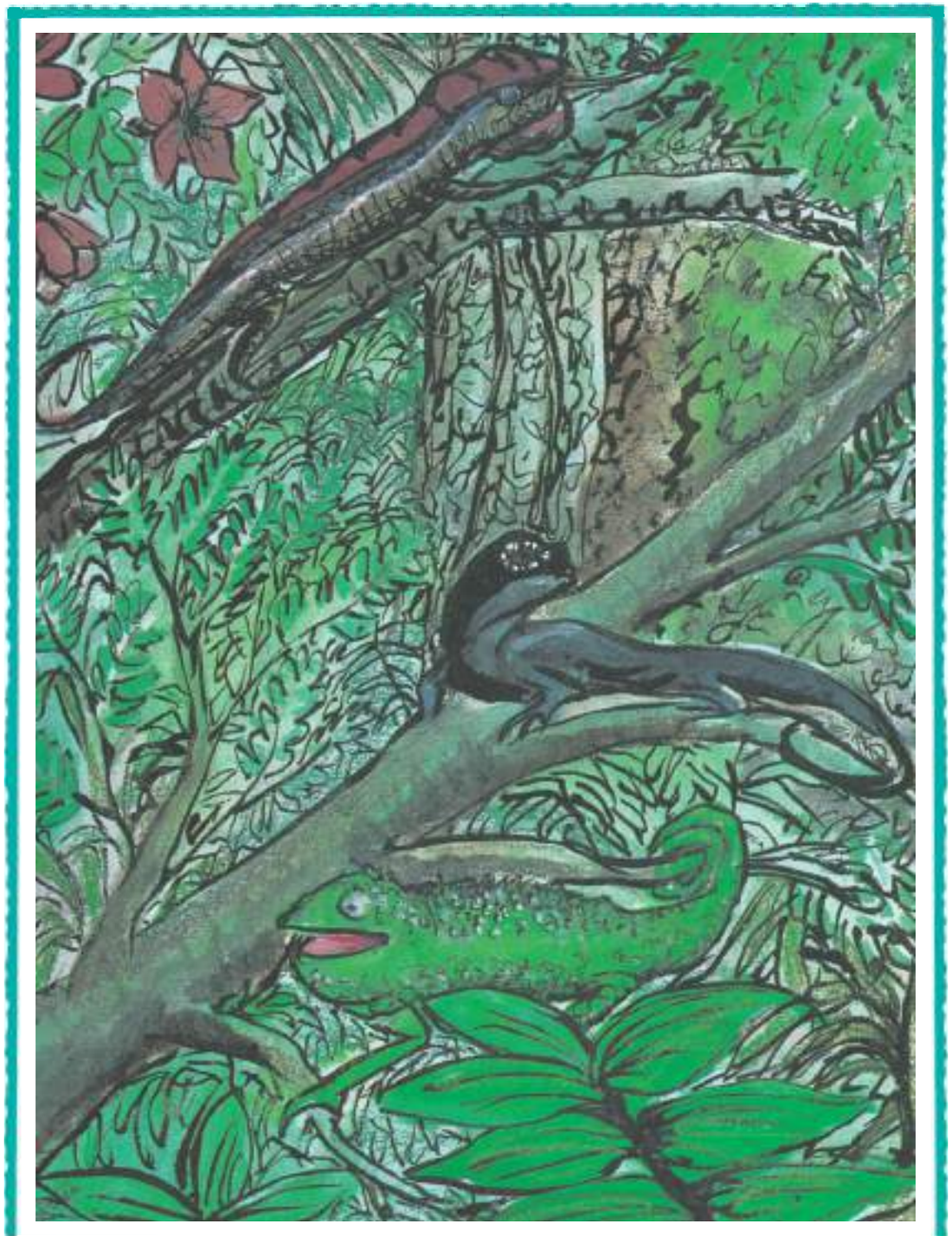

एक होती थी राम गिरगिट - मोटी-ताज़ी, बहुत फुर्तीली, वह हमारी सबसे बड़ी दुश्मन थी।

उसने भगवान राम का भी तो अपमान किया था। कहते हैं, एक बार जब राम वनवास में थे, तो उन्हें प्यास लगी। उन्होंने झाड़ी पर बैठी गिरगिट से पानी माँगा। पानी देना तो दूर, उस धूर्त ने उन पर मूत्र त्याग दिया। अपमान से तिलमिलाते भगवान राम ने उसे श्राप दे डाला, जब भी दिखाई दोगी, मार खाओगी।

मगर एक गिलहरी ने नारियल का पानी लाकर उनकी प्यास बुझाई। राम ने प्यार से गिलहरी की पीठ पर हाथ फेरा, जहाँ आज भी तीन काली धारियाँ दिखाई देती हैं।

गिरगिट के अलावा हम हरी, लाल, पीली मधुमक्खियाँ भी पकड़ा करते थे और माचिस की डिबियों में बंद कर दिया करते थे। वे कटनमनी की झाड़ियों पर ही बैठी मिलती थीं। हम हैलिकॉप्टर जैसी ड्रेगनफ्लाई भी पकड़े बिना नहीं छोड़ते थे। हम उनके बंद होकर बार-बार खुलते पंखों से बहुत प्रभावित होते थे।

"तो ... अब हम क्या करें?" वत्सला ने मेरी तंद्रा भंग की।

"हुँअअ ..." मैं सोचने लगा। शादी के बाद तो बस सोचने का ही काम रह गया है। सोचने में कुछ बुराई नहीं। पर कोई अगर कुछ न करे, केवल ...

अपने साले के बेटे को कुछ तो भेंट करना ही होगा। ऐसा नहीं कि मैं कुछ देना नहीं चाहता था। पर जब मैं अकेला था, अम्मा को खर्चा देने के बाद भी 200 रुपये बचा लेता था।

अब पत्नी, परिवार, रिश्तेदारों के बीच, मेरे सिर पर हर महीने 300 रुपये तक का कर्ज़ चढ़ जाता था। फिर कई अनदेखे खर्चे भी हो जाते थे। पर अगर भेंट नहीं दी तो वे लोग उम्रभर वत्सला से उसका बदला निकालते रहेंगे। उसका डरना स्वाभाविक ही था।

"अप्पा ... मेरे लिए एक पानी वाली घड़ी ला दो?" नन्हें ने फिर मेरी सोच पर अंकुश लगा दिया।

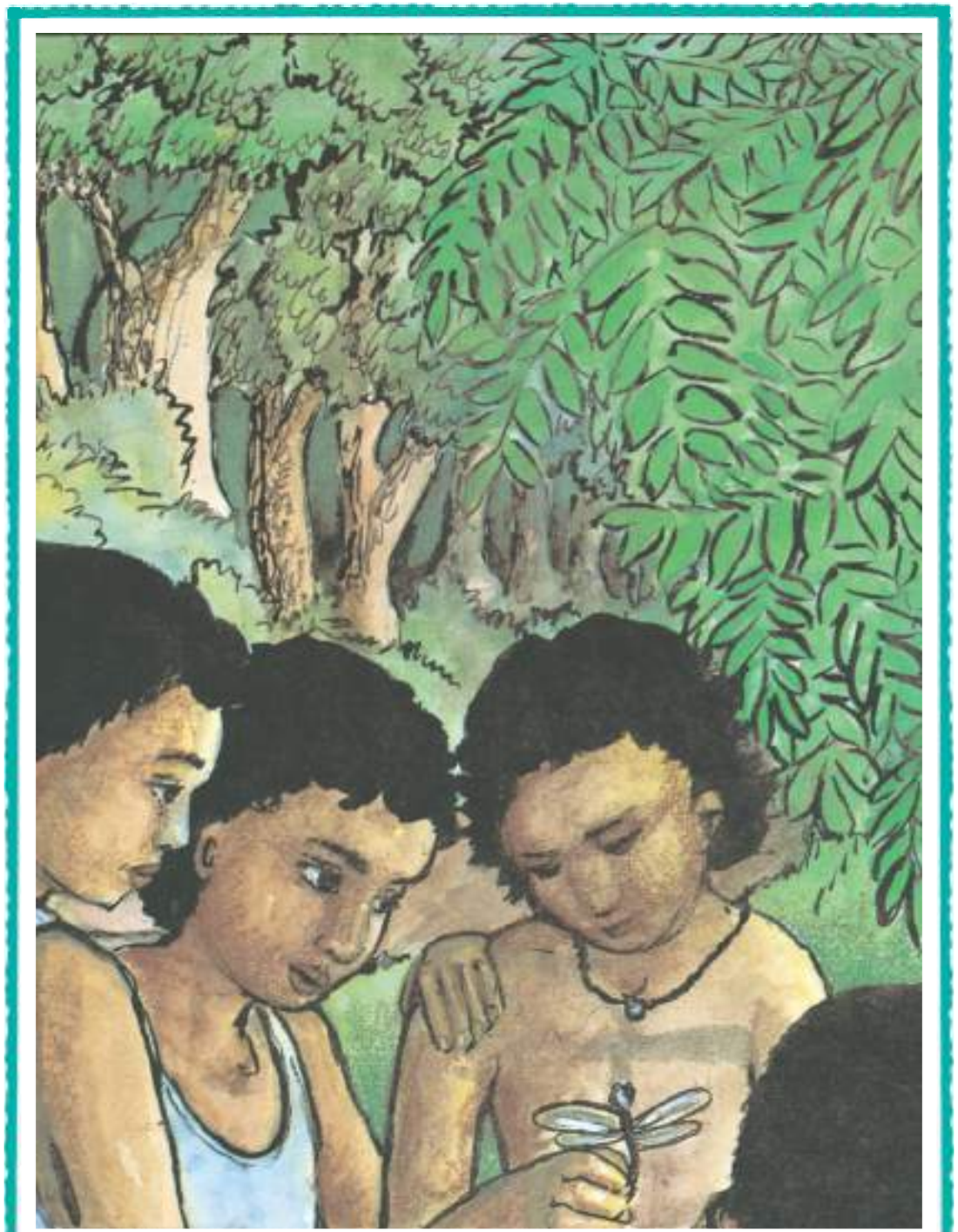

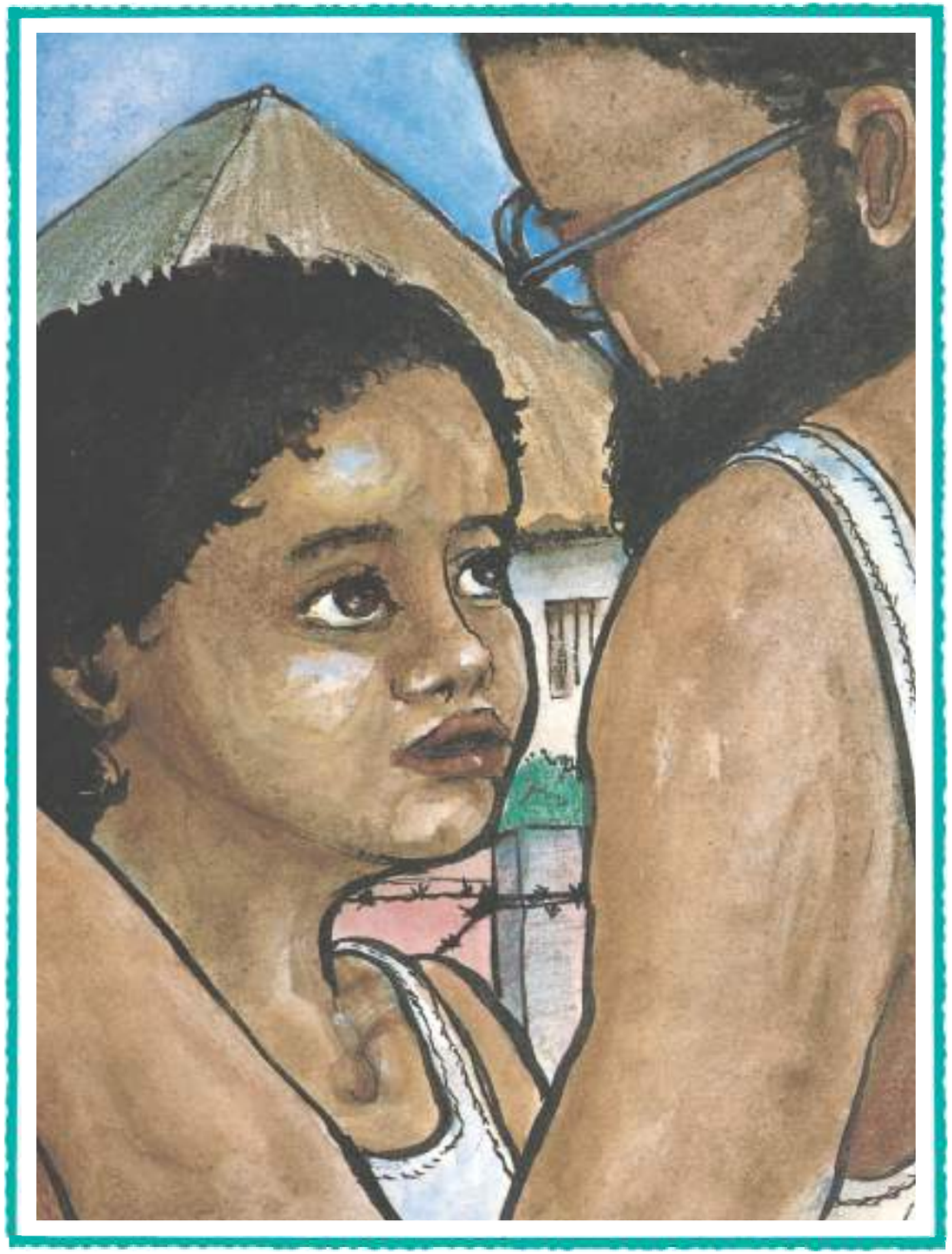

"क्या?"

"पानी वाली घड़ी!"

उसने शायद मकान मालिक के पोते के पास देखी होगी। दो दिन पहले रातभर वो प्लास्टिक की ए. के. 47 बंदूक़ के लिये रोता रहा था जो उसने उसके पास देखी थी। ऐसे खिलौनों की उस आदमी के सामने क्या बिसात जो हर महीने दस घरों से 500 रुपये महीने किराये की उगाही करता हो। हमसे तो कितनी बार मकान खाली करने को कह चुका है, उसकी पत्नी को तो इस बात में महारत हासिल है।

"ला दोगे न अप्पा," नन्हा ज़िद्द पर अड़ा हुआ था।

"हाँ, हाँ ला देंगे," मेरे कहते ही वत्सला उसे गोदी में उठाकर भीतर ले गई।

उसे न ले जाती तो उसकी ज़िद्द बढ़ती जाती और मैं असहाय-सा, अपने इकलौते बेटे की मामूली-सी इच्छा पूरी न कर पाने के अपराध के बोझ तले, कुढ़ता रहता।

मैं ठोड़ी के नीचे हाथ रखकर सोचने लगा।

पड़ोस के घर से बर्तनों के माँजने की आवाज़ आ रही थी। मुमताज़ के आँगन में लगे सैहजन के पेड़ से एक पीला पत्ता नीचे तैरता हुआ उतर रहा था। धीमी-धीमी हवा बह रही थी।

प्यैं प्यैं प्यैं ... किसी ने आवारा कुत्ते को पत्थर मार दिया था!

हम गिरगिट हर रोज़ ही पकड़ा करते थे। मदुरै अय्या की रसोई की खिड़की तले उगी झाड़ियों में घुस-घुस कर उन्हें ढूँढ़ा करते थे।

खिड़की के पास ही एक छुई-मुई की झाड़ी थी। हम उसे बार-बार छूकर उसके पत्तों का सहमकर सिमट जाना देखा करते थे। केले के मुलायम पत्ते, तोड़-तोड़ कर खाया करते थे। पान के पत्तों को भी हम खूब चबाते थे। एक तो हमारे होठों में जलन हो जाती थी। तिस पर अपने-अपने घरवालों से मार भी खानी पड़ती थी।

वो भी क्या दिन थे! कितनी मीठी यादें अपने पीछे छोड़ गए। न जाने कितनी गिरगिटें हमारे हाथों स्वर्ग को प्राप्त हुईं। न जाने कितनी मक्खियों को हमने माचिस की डिब्बियों में बंद किया। ... तितलियाँ! सब याद आ रहा था। क्या वो पाप था? क्या हमने पाप किया था, ऐसा संभव था?

मुझे शेखर से कर्ज़ा माँगना होगा, मैंने फैसला किया। आने वाले त्यौहार और भेंट का खर्च निबट जाएगा। कर्ज़ किस प्रकार लौटाऊँगा, मुझे बिल्कुल पता नहीं था।

कुछ दूरी से मैंने अपने नन्हें बेटे को आता देखा। उसके सीधे हाथ में एक तितली थी और उल्टे हाथ में उसके उखाड़े हुए सुंदर पंख।

"अप्पा!" कहकर वो दौड़ता हुआ मुझे दिखाने आ रहा था।

जीवन में पहली बार मैंने स्वयं को, उसे सज़ा देने के लिये तैयार कर लिया।

आओ बचपन याद करें?

बचपन की सुनहरी यादें हमें जीवन भर गुदगुदाती रहती हैं। आइए अपने साथियों के साथ, खेल-खेल में एक दूसरे का बचपन जानें।

1. **एक गोल दायरे में बैठ जाएँ।**
2. **बारी-बारी से बिना बोले, केवल संकेतों और हाव-भाव द्वारा इन तीन प्रश्नों का उत्तर दें।**
3. **सबसे छोटा सदस्य शुरू करे।**
4. **दायरे में उसके ठीक सामने बैठा सदस्य, उसके संकेतों के आधार पर, पूरे समूह को बोलकर बताए कि पहले सदस्य के क्या उत्तर थे।**
5. **फिर उसके साथ वाला सदस्य संकेतों द्वारा उत्तर दे और फिर उसके सामने वाला बोलकर जवाब दे।**

इसी प्रकार खेल चलता रहे।
खेलकर देखिए, आप सचमुच बचपन में लौट जाएँगे!

प्रश्न (संकेतों और हाव-भाव द्वारा उत्तर दें।)

1. बचपन में आप क्या बनना चाहती थीं?
2. आपके बचपन की कोई सुखद घटना जो आपको अब तक रोमांचित करती हो?
3. बचपन की कोई ऐसी घटना जो आपको दुखी करती हो?

कहानी के कठिन शब्दों के अर्थ

नीचे दिए गए शब्द इसी कहानी से लिए गए हैं। इन शब्दों के सरल अर्थ भी दिए गए हैं। इन्हें अपनी बोलचाल की भाषा में प्रयोग करने का प्रयास करें।

महारत	कौशल, जानकारी	**स्वाभाविक**	सहज ही, प्राकृतिक रूप से
उत्साह	उमंग, जोश	**आदर**	सम्मान, इज्ज़त
स्वतंत्र	आज़ाद, मुक्त	**यकीन**	भरोसा, विश्वास
आक्रोश	कोसना, शाप देना	**अभिशाप**	श्राप, बद्दुआ
धूर्त	शैतान, चालाक	**तंद्रा**	नींद, खुमारी

क्या पीड़ा से त्रस्त मानव ही श्राप देने का अधिकारी है? या फिर ईश्वर ने निरीह जीव-जंतु, जैसे तितली, गिरगिट आदि को भी उतना ही संवेदनशील बनाया है? इस कहानी को पढ़ें और स्वयं निर्णय करें।

सर्वश्रेष्ठ कथामाला भारत के महान लेखकों की एक शानदार कहानी श्रृंखला है। आइऐ अपने देश के साहित्य का खजाना खोजें, इन कहानियों और इनसे जुड़े खेलों और अभ्यासों के ज़रिए!

इस पुस्तक की कहानी तमिल भाषा के प्रसिद्ध लेखक **पुधुवई रा रजनी** ने लिखी है।